ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 34 कुल पृष्ठ-8 20 से 26 जून, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 आ. कृ.-01

आर्य समाज लोअर बाजार शिमला का 137वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य समाज शिमला देश की ऐतिहासिक आर्य समाज है

– आचार्य रामानन्द

आधुनिक तकनीक द्वारा ही नई पीढ़ी को किया जा सकता है संस्कारित

– आचार्य महावीर मुमुक्षु

वैदिक शिक्षा के बिना विश्वगुरु नहीं बन सकता भारत

– हृदयेश आर्य

आर्य समाज लोअर बाजार, शिमला, हिमाचल प्रदेश का 137वाँ वार्षिकोत्सव अत्यन्त धूमधाम तथा भव्यता के साथ 16 जून, 2019 को सम्पन्न हो गया। 9 से 16 जून, 2019 तक आयोजित ऋग्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति 16 जून को प्रातः 10 बजे हुई। यज्ञ के ब्रह्मा पद को आर्य समाज के उद्भट् विद्वान् एवं आर्य समाज शिमला के प्रधान आचार्य रामानन्द जी ने सुशोभित किया। समाज का मुख्य उत्सव 14 से 16 जून, 2019 तक बड़े उत्साह के साथ आयोजित हुआ। इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य महावीर मुमुक्षु, युवा आर्य भजनोपदेशक श्री दिनेश आर्य पथिक एवं श्री सुखपाल आर्य (सहारनपुर) आदि के प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहा।

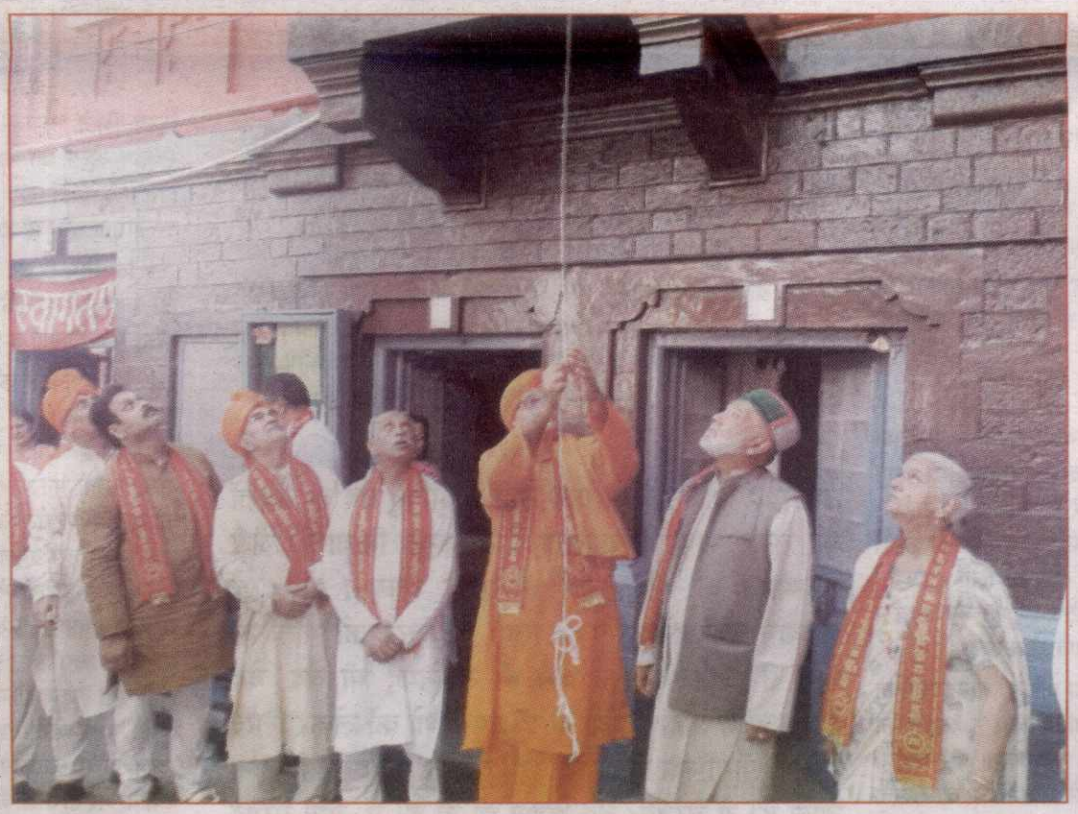

वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य समाज द्वारा संचालित आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह भी मनाया गया जिसमें विद्यालय की सैकड़ों छात्राओं ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर पारितोषिक भी ग्रहण किये। विद्यालय के पारितोषिक वितरण समारोह में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त शिमला नगर निगम की महापौर श्रीमती कुसुम सजरेठ, उपमहापौर श्री राकेश शर्मा, क्षेत्र की पार्षद् श्रीमती सुषमा कुठियाला ने कार्यक्रम में भाग लिया और छात्राओं को पारितोषिक प्रदान किये।

इस सम्पूर्ण आयोजन का संयोजन आर्य समाज के कर्मठ मंत्री श्री हृदयेश आर्य ने किया तथा अध्यक्षता आर्य समाज के शिरोमणि विद्वान् आचार्य रामानन्द जी ने की। प्रतिदिन प्रातः 7.30 से 9.30 बजे तक चलने वाले ऋग्वेद पारायण महायज्ञ के पौरोहित्य का दायित्व आर्य समाज के धर्माचार्य श्री रवीन्द्र कुमार शास्त्री ने बड़ी निष्ठा के साथ निभाया। वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम अत्यन्त रोचक एवं प्रभावशाली रहा।

14 जून, 2019 को अपरान्ह 3 बजे से विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें हजारों छात्र–छात्राओं तथा सैकड़ों आर्यजनों ने भाग लेकर विश्व के विख्यात शहर शिमला के बाजारों को वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द के जयकारों से गुंजा दिया। शोभा यात्रा में न केवल शिमलावासी बल्कि देशभर से शिमला भ्रमणार्थ आये हुए हजारों पर्यटक भी साक्षी बने और आर्य समाज की शक्ति का प्रचण्ड प्रदर्शन उन्हें देखने को मिला। उत्सव में जहाँ हिमाचल के विभिन्न जिलों से आर्यजन सम्मिलित हो रहे थे वहीं पंजाब, हरियाणा, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के आर्यजन भी बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम प्रतिदिन 9.30 से 12 बजे तक प्रवचन एवं भजन तथा 2.30 से 5.30 बजे तक विशेष सम्मेलनों के आयोजन के साथ चला। इस अवसर पर महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन एवं शिक्षा सम्मेलन का विशेष आयोजन किया गया जिसमें विद्वानों के व्याख्यान तथा भजनोपदेशकों के मधुर भजनों का आनन्द श्रोताओं ने उठाया।

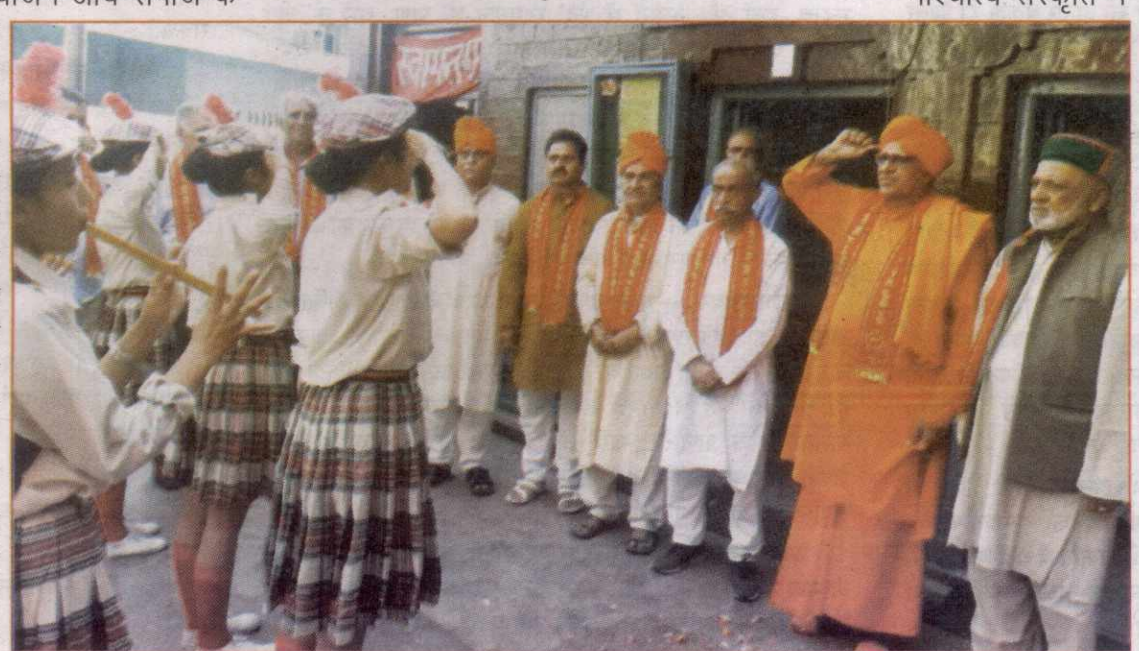

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने तीनों दिन प्रातः यज्ञ पर तथा अपरान्ह आयोजित सम्मेलनों में अपने व्याख्यानों द्वारा आर्यजनों का मार्ग दर्शन किया। उनके अतिरिक्त आचार्य रामानन्द जी एवं आचार्य महावीर मुमुक्षु जी के भी सारगर्भित व्याख्यान श्रोताओं को निरन्तर सुनने को मिलते रहे। स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवन की सार्थकता विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ–साथ संस्कार देना भी अत्यन्त आवश्यक है। बच्चों का सर्वांगीण विकास बिना संस्कार दिये अधूरा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन तथा संशोधन की आवश्यकता है, क्योंकि शिक्षा के पाठ्यक्रम में नैतिक मानव मूल्यों, परोपकार, सेवा, ईमानदारी, देशभक्ति, ईश्वरभक्ति एवं माता–पिता की सेवा आदि आवश्यक शिक्षाओं का कोई स्थान नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि प्रारम्भ से ही बच्चों को नैतिक शिक्षा एवं संस्कारों के प्रशिक्षण की सुविधा आवश्यक रूप से उपलब्ध कराई जाये। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली लार्ड मैकाले द्वारा प्रारम्भ की गई शिक्षा प्रणाली है जिसके पीछे मैकाले की यह मनोवृत्ति काम कर रही है कि भारत की भावी पीढ़ियों को प्राचीन वैदिक संस्कृति अथवा भारतीय संस्कृति से दूर किया जाये तथा खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा, मानसिकता आदि से उन्हें पाश्चात्य संस्कृति में रंग दिया जाये। अपने इस उद्देश्य को मैकाले ने अपने पिता को लिखे अनेक पत्रों में व्यक्त किया है और आज हम अपने सभी विद्यालयों में मैकाले की मानसिकता को व्यवहारिक रूप में क्रियान्वित होता देख रहे हैं। इस विषय में समाज एवं सरकार दोनों को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

महिला सम्मेलन में बोलते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि यद्यपि महर्षि दयानन्द सरस्वती की कृपा से 19वीं शताब्दी में महिलाएँ जिस प्रकार से पढ़ने–लिखने एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने, समाज के महत्त्वपूर्ण निर्णयों से अलग

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

उपनिषद् परिचय व उनका प्रभाव

- श्री जसवन्त राय गुगलानी

उपनिषद् शब्द का अर्थ : उप का अर्थ 'समीप' तथा निषद् का अर्थ बैठता है। ब्रह्म ज्ञानियों के समीप बैठकर अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करना। सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय का ज्ञान, परम सत्ता क्या है?पर और अपर ब्रह्म क्या है?ब्रह्म की प्राप्ति कैसे हो सकती है?शरीर-आत्मा, आत्मा-परमात्मा आदि के सम्बन्धों का ज्ञान इन उपनिषदों में वर्णित है। उपनिषदों में आख्यायिकों के माध्यम से विवेचन ने इनको रोचक बना दिया।

उपनिषद् कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं हैं अपितु वेद के संदेशों को सरल भाषा में ब्रह्मवेत्ताओं ने प्रस्तुत किया है। जैसे महाभारत के भीष्म पर्व के 22वें अध्याय से 42वें अध्याय तक के 18 (अठारह) अध्यायों को गीता के नाम से जाना जाता है वैसे ही उपनिषद् भी वेद, वेद शाखाओं व ब्राह्मण ग्रंथों के विशेष अंशों को लेकर लिखे गये हैं। पौराणिक जगत् में इन्हें 'वेदान्त' नाम से भी जाना जाता है। ये वस्तुतः वेद संदेश ही तो हैं। पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी उदाहरण के रूप में कहते हैं जैसे गंगा नदी से निकली नहर में भी जल तो गंगा का ही तो है।

उपनिषदों की संख्या - नये पुराने उपनिषदों की संख्या 200 से अधिक है। महर्षि दयानन्द ने ग्यारह उपनिषदों को प्रामाणिक माना है। स्वामी शंकराचार्य ने इनमें से दस का भाष्य किया है। ये प्रामाणिक उपनिषद् हैं - (1) ईशोपनिषद् (2) केनोपनिषद् (3) कठोपनिषद् (4) प्रश्नोपनिषद् (5) मुण्डकोपनिषद् (6) माण्डूक्योपनिषद् (7) ऐतरेय उपनिषद् (8) तैत्तिरीयोपनिषद् (9) छान्दोग्योपनिषद् (10) वृहदारण्यकोपनिषद् (11) श्वेताश्वतरोपनिषद्।

उपनिषद् की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि अन्य मत-मतान्तर भी अपने-अपने आध्यात्मिक ग्रन्थों को उपनिषद् नाम देने लगे। यहाँ तक कि अल्लोपनिषद् भी रचा गया।

उपनिषदों के विषय

ईशोपनिषद् - इस उपनिषद् में ईश्वर व जगत् के स्वरूप का वर्णन किया गया है। ईश्वर की सर्व- व्यापकता व नित्यता तथा जगत की अनित्यता, गतिशीलता तथा जड़ता के बारे में व्याख्या की गई है। इसमें यह भी समझाया गया है कि संसार के सभी पदार्थ ईश्वर के हैं, हमारे नहीं। परमात्मा ने सभी पदार्थ मनुष्य के भोग के लिए ही प्रदान किये हैं। यह धन मनुष्य के पास ईश्वर की धरोहर है। मनुष्य लालच न करें। वह ईश्वर प्रदत्त इस धन का भोग त्याग भाव से करें।

केनोपनिषद् - इस उपनिषद् में परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता का वर्णन आख्यायिकाओं द्वारा किया गया है। उपनिषद्कार ने आत्मा को नेत्रों का नेत्र तथा श्रोत्र का भी श्रोत्र बताया है। यह आत्मा चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता और न ही उसे वाणी से प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर इंद्रियों का विषय नहीं है और न ही आत्मा इंद्रियों का विषय है। उपनिषद्कार ब्रह्म के विषय में लिखता है कि ब्रह्म का पूर्ण ज्ञान किसी को नहीं हो सकता। इस उपनिषद् में ब्रह्म प्राप्ति के साधन तप और दम को बताया है।

कठोपनिषद् - इस उपनिषद् में यम व नचिकेता के संवाद को प्रस्तुत किया गया है। यमाचार्य, नचिकेता को तीन वर मांगने के लिए कहता है अपने तीसरे वर में नचिकेता आचार्य से मनुष्य के मरने के बाद की स्थिति के बारे में जानना चाहता है। वह पूछता है कि मरता शरीर है या आत्मा। मरने के उपरान्त आत्मा कहाँ जाता है। प्रथम तो आचार्य उसकी परीक्षा लेने के हेतु उसे कोई और प्रश्न पूछने को कहता है। उसे विभिन्न प्रलोभन देकर इस प्रश्न को न पूछने का आग्रह करता है। नचिकेता के न मानने पर तथा उसकी दृढ़ता को दृष्टिगत करते हुए शरीर की नश्वरता तथा आत्मा की अमरता की बात समझाता है। यमाचार्य उसको श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग का अन्तर बताता है। ईश्वर के निज नाम ओ३म् की महत्ता तथा उसके जप से क्या लाभ हो सकता है का वर्णन किया गया है।

प्रश्नोपनिषद् - इस उपनिषद् में 6 जिज्ञासु (1) सुकेश (2) सत्यकाम (3) गार्ग्य (4) कौशल्य (5) वैदर्भी (6) कबन्धी, आचार्य पिप्पलाद से ब्रह्म विद्या के बारे में प्रश्न करते हैं।

इन्होंने जो प्रश्न आचार्य के सम्मुख रखे वे इस प्रकार हैं - यह सारा संसार किससे उत्पन्न हुआ, कितने देवता इस सृष्टि को धारण कर रहे हैं?कौन सा देव मुख्य है?प्राण कहां से और किससे उत्पन्न होता?प्राणों के नाम और स्थान?प्राणों के कार्य क्या हैं?कौन सोता है, कौन जागरित रहता, सुषुप्ति अवस्था क्या है?सुख किसको होता है?अपर ब्रह्म और पर ब्रह्म क्या है?ओंकार के ध्यान से क्या लाभ है?सोलहकला युक्त कौन है?वे सोलह कलाएं कौन सी हैं?

मुण्डकोपनिषद् - समस्त अविद्याओं-अन्धविश्वासों आदि को मूण्डने, समाप्त करने के कारण इस उपनिषद् को मुण्डकोपनिषद् कहते हैं। इसमें पर विद्या, अपर विद्या क्या है?प्रकृति व ब्रह्म का वर्णन, ब्रह्म प्राप्ति से लाभ, त्रैतवाद, ब्रह्म प्राप्तकर्ता के लक्षण आदि विषयों का सुन्दर वर्णन इस उपनिषद् में किया गया है।

माण्डूक्योपनिषद् - इसमें केवल बारह श्लोक हैं। इसमें ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् की व्याख्या की गई है। आत्मा की चतुर्विध अवस्था का वर्णन इसमें किया गया है। तीन अवस्थायें एवं तीन शरीर-स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर तथा कारण शरीर, ब्रह्म की तीन अवस्थाओं का सुन्दर वर्णन किया गया है, श्री गौड़पादाचार्य ने इस पर कारिकायें (श्लोक) लिखी हैं जिससे यह उपनिषद् लोकप्रिय हो गया है।

ऐतरेयोपनिषद् - इसमें ब्रह्म विद्या का वर्णन है। सृष्टि के निर्माण में पाँच लोकों का निर्माण का वर्णन। परमात्मा द्वारा सृष्टि के निर्माण के प्रयोजन की व्याख्या। संसार के पदार्थ तथा उनका उपभोग करने वाला कौन है तथा वह कैसा होना चाहिए। ब्रह्म और ब्रह्माण्ड की चर्चा। मनुष्य शरीर की महत्ता का वर्णन। जड़ और चेतन की रचना एवं उनमें भेद। इस उपनिषद् में अन्न के महत्त्व को तथा भूख और प्यास के प्रभाव को दर्शाया गया है। भूख और प्यास के स्थान, अपान वायु के कर्त्तव्य, शुक्र-वीर्य के महत्त्व की, संस्कारों के महत्त्व की तथा पुनर्जन्म आदि की शंकाओं का उपनिषद्कार ने समाधान किया है।

तैत्तरीयोपनिषद् - इस उपनिषद् में 3 भाग हैं। प्रत्येक भाग को वल्ली कहा गया है। ये 3 वल्लियाँ है। - (1) शिक्षा वल्ली, (2) ब्रह्मानन्द वल्ली, (3) भृगुवल्ली।

शिक्षा वल्ली - इसमें शिक्षा के बारे में वर्णन है। वर्ण एवं स्वर ज्ञान, मात्रा ज्ञान, स्वाध्याय और प्रवचन पर बल, ऋत और सत्य के अर्थ तथा इनमें भेद, तप, दम व शम का महत्त्व, माता-पिता व गुरु भक्ति की व्याख्या सुन्दर ढंग से की है।

ब्रह्मानन्द वल्ली - गुरु शिष्य की प्रतिज्ञा, ब्रह्म के स्वरूप, सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय कैसे होती है, पंचकोश तथा उनका उद्देश्य - (1) अन्नमय कोष (2) प्राणमय कोष (3) मनोमय कोष (4) विज्ञानमय कोष (5) आनन्दमय कोष की सुन्दर व्याख्या की गई है।

उपनिषद् कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं हैं अपितु वेद के संदेशों को सरल भाषा में ब्रह्मवेत्ताओं ने प्रस्तुत किया है। जैसे महाभारत के भीष्म पर्व के 22वें अध्याय से 42वें अध्याय तक के 18 (अठारह) अध्यायों को गीता के नाम से जाना जाता है वैसे ही उपनिषद् भी वेद, वेद शाखाओं व ब्राह्मण ग्रंथों के विशेष अंशों को लेकर लिखे गये हैं। पौराणिक जगत् में इन्हें 'वेदान्त' नाम से भी जाना जाता है। ये वस्तुतः वेद संदेश ही तो हैं। पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी उदाहरण के रूप में कहते हैं जैसे गंगा नदी से निकली नहर में भी जल तो गंगा का ही तो है।

भृगु वल्ली - वरुण के पुत्र भृगु के अपने पिता से इन विषयों पर प्रश्न किये गये - भौतिकवाद व अध्यात्मवाद, प्रेय मार्ग व श्रेय मार्ग जैसे विषयों पर पिता के समाधान के माध्यम से उपनिषद्कार ने प्रस्तुत किये हैं।

छान्दोग्योपनिषद् - सामवेद के ब्राह्मण ग्रन्थ के प्रारम्भिक दो अध्यायों को छोड़कर शेष भाग छान्दोग्योपनिषद् है। इसमें अधोलिखित विषयों पर सारपूर्ण चर्चा हैं :-

ओ३म् की महत्ता, उद्गीथ का अर्थ एवं उपासना, प्राणों का महत्त्व, देवों और असुरों में भेद, सामगान के प्राण, धर्म के तीन आधार यज्ञ अध्ययन व दान पर तथा वसु आदित्य व रूद्र की चर्चा। संवर्ग विद्या क्या है?सत्यकाम जाबाल की कथा सत्य का प्रभाव, अश्वपति की अपने राज्य में सद्गुणों की चर्चा श्वेतकेतु की कक्षा में सत् और असत् के भेद दर्शाना, नारद द्वारा सन्त कुमार से आध्यात्म ज्ञान प्राप्ति हेतु जाने का आख्यान, देवताओं के राजा इन्द्र तथा असुरों के प्रतिनिधि विरोचन द्वारा प्रजापति से आत्मा के स्वरूप को जानना आदि अनेकों अध्यात्म के विषयों पर विचार किया गया है।

बृहदारण्यक - शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्यायों को बृहदारण्यक कहते हैं। इस उपनिषद् में गोमेध, अश्वमेध व नरमेध यज्ञों में इन शब्दों के अर्थों के अनर्थों को उजागर किया गया है। ब्रह्म के मूर्त व अमूर्त रूप का वर्णन किया गया है। ऋषि याज्ञवल्क्य से प्रश्नोत्तर। गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच प्रश्नोत्तर। जनक और याज्ञवल्क्य का संवाद। याज्ञवल्क्य द्वारा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीय अवस्था का वर्णन।

श्वेताश्वतर उपनिषद् - इसकी रचना पद्यों में हुई है। इसमें 6 अध्याय तथा 113 पद्य हैं। इसके अनेक पद्य अन्य ग्रन्थों में भी पाये जाते हैं। इस उपनिषद् में चर्चित विषय हैं - सृष्टि का कारण, प्रकृति-जीव-ब्रह्म, प्राणायाम के स्थान व लाभ, अज-अजा व वृक्ष तथा दो पक्षियों की आख्यायिकाएं, त्रैतवाद, दुःख का अन्त आदि।

उपनिषदों के भाष्य एवं अनुवाद - दारा शिकोह जो कि मुगल बादशाह शाहजहां का बेटा तथा औरंगजेब के भाई ने 52 उपनिषदों का अनुवाद सन् 1657 से 1674 तक अर्थात् 18 वर्ष में फारसी में किया। इस अनुवाद को सिर्रे-अकबर के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है महान् रहस्य।

सन् 1757 में यानी 80 वर्ष से भी अधिक समय के बाद एक फ्रांसीसी सज्जन जरियाल ने फारसी के अनुवाद को देखा और उस पर मोहित हो गया। उन्होंने इस अनुवाद किये उपनिषदों को फ्रांसीसी भाषा में अनूदित किया।

योरोपियन विद्वान् ड्यूपोरो ने उपनिषदों का अनुवाद जर्मन तथा लैटिन-भाषा में किया। मैक्समूलर ने उपनिषदों का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया जिसका नाम उसने 'सेक्रेड बुक्स ऑफ दि ईस्ट' नाम से उसने 12 उपनिषदों का अनुवाद किया। यह अनुवाद उसने 5 वर्षों में किया।

सन् 1816 से 1819 के बीच राजा राम मोहन राय ने भी अंग्रेजी में इनका अनुवाद किया।

उपनिषदों की लोकप्रियता बढ़ती गयी और इनका अनुवाद भिन्न-भिन्न भाषाओं में होता गया। इनकी लोकप्रियता के परिणाम स्वरूप अन्य मत वाले भी अपनी अध्यात्म की पुस्तकों का नाम उपनिषद् रखने लग गये। यहाँ तक कि अल्लोपनिषद् की रचना इस्लामिक बन्धुओं द्वारा कर दी गई।

उपनिषदों का प्रभाव - दारा शिकोह ने लिखा उसने अध्यात्म की बहुत सी पुस्तकें पढ़ी, कुरान, तौरेत, अंजलि, जबर आदि पढ़े परन्तु मन को शान्ति प्राप्त नहीं हुई।

दारा शिकोह की भतीजी, शहंशाह औरंगजेब की पुत्री जिसका नाम जेबुन्निसा था, अपने चच्चा दारा शिकोह के पास बैठकर उपनिषदों के उपदेश सुना करती थी। जरा देखिए कि इन उपदेशों का असर उसके मन पर कितना पड़ा। एक चीन के व्यापारी ने औरंगजेब को एक दर्पण भेंट किया। उसने वह दर्पण अपनी पुत्री जेबुन्निसा को भेज दिया। उस दर्पण में अपना मुख देखकरशृंगार किया करती थी। एक दिन शहजादी ने अपनी दासी को वह आईना लाने को कहा। दासी जब दर्पण ला रही थी, वह दर्पण उसके हाथ से गिर गया और टूट गया। वह घबरा गई कि अब तो शहजादी बहुत दण्ड देगी। देर होती देख शहजादी ने दासी को पुनः दर्पण शीघ्र ही लाने का हुक्म दिया। दासी डरती-डरती शहजादी के निकट आई और बोली - 'अज कजा आईनाये चीनी शिकस्त' अर्थात् मेरी शामत आई है क्योंकि मेरे हाथ से चीनी दर्पण टूट गया। इस पर शहजादी क्रोधित न होकर, मुस्कराते हुए बोली - 'अज कजा आईनाये चीनी शिकस्त, खूब शुद सामाने खुदबीनी शिकस्त।' अर्थात् चीनी शीशा टूट गया, अच्छा हुआ मेरे अभिमान का सामान समाप्त हो गया। यह था उपनिषदों के उपदेश का प्रभाव।

दारा शिकोह उपनिषदों से इतना प्रभावित हुआ कि उसके मतावलम्बी उसे काफिर कहने लगे। उपनिषदों के अध्यात्म ज्ञान के मोह में उसे शाही तख्त और अपनी जान तक गंवानी पड़ी।

जर्मनी के विद्वान् शौपनहार ने लिखा, 'उपनिषदों से मेरी आत्मा को शान्ति मिली है और मरने के पश्चात् भी इन्हीं से शान्ति मिलेगी।

प्रोफेसर मैक्समूलर लिखते हैं - उपनिषदों के ज्ञान के फलस्वरूप मेरे जीवन में बहुत सुधार हुआ है। उपनिषद् महान् बुद्धि वालों का फल है। हमारा ईसाई मत इसके सामने जड़ नहीं पकड़ सकता।

स्वीडन के विद्वान पाल ड्यूसन का मत है कि उपनिषदों के ज्ञान से प्रतिक्षण जीवन में ऐसी शान्ति मिलती है जैसी और कहीं पर उपलब्ध नहीं।

मि. ह्यूम ने अपनी पुस्तक Dogmas of Buddhism में लिखा है कि उन्होंने बड़े-बड़े दार्शनिकों अरस्तु, अफलातून, सुक्रात, प्लेटो आदि के ग्रन्थों को पढ़ा है, पर जो विद्या एवं शान्ति उपनिषदों से प्राप्त हुई है वह अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं।

श्री जी. आर्क ने अपनी पुस्तक Is God Knowable में लिखा है कि मनुष्य की मानसिक, आत्मिक, सामाजिक आवश्यकताएं कैसे पूर्ण होती है का सुन्दर विवरण उपनिषदों में दिया गया है।

अन्ततः मैं पाठक वृन्द से साग्रह अनुरोध करूँगा कि वैदिक साहित्य का अध्ययन करके अपनी सभी समस्याओं का निराकरण करें।

- म. नं.-91/4, अर्बन एस्टेट, गुड़गांव-122001
(हरियाणा)
मो.:-9999667647

योग दिवस पर विशेष

योग की जीवन दृष्टि

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार

पतंजलि मुनि ने योगदर्शन के द्वितीय सूत्र 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' में ही योग का स्वरूप बतला दिया है। व्यास जी ने इसे 'योगः समाधिः' कहकर इसे बिल्कुल ही स्पष्ट कर दिया है तथापि योगदर्शन केवल ध्यान तथा समाधि का ही शास्त्र नहीं है अपितु हमारे व्यावहारिक जीवन के लिए भी वह उतना ही उपयोगी एवं आवश्यक है जितना कि समाधि के लिए यह शास्त्र व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को पूर्णतः शुद्ध एवं नियमित करने वाला है। इसी अभिप्राय से पतंजलि मुनि ने योग को आठ अंगों में विभक्त किया है। योग के इन आठों अंगों पर सावधानीपूर्वक विचार करने से तो ऐसी ही प्रतीति होती है कि इनके द्वारा पतंजलि व्यक्ति एवं समाज के जीवन को पूर्णतः नियन्त्रित करना चाह रहे हैं।

काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि से ग्रस्त होकर ही व्यक्ति आपराधिक जीवन व्यतीत करता है। इनसे उसकी चित्तवृत्तियाँ बहिर्मुख होती है। पतंजलि इन सभी वृत्तियों के निरोध का मार्ग हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। यह निरोध केवल समाधि के लिए ही नहीं, अपितु सांसारिक जीवन में भी होना चाहिए।

मन की वृत्तियों के अधीन होकर ही व्यक्ति अपने सभी कार्य करता है। यदि उसकी ये वृत्तियाँ अमर्यादित तथा भोगोन्मुखी होगी तो उसके कर्म भी उसी प्रकारा के होंगे। यदि चित्तवृत्तियाँ शान्त एवं नियमित होंगी तो इनका प्रभाव व्यक्ति के दैनिक जीवन एवं उसके कार्यों पर भी पड़ेगा।

व्यक्ति प्रायः असत्य, हिंसा स्तेय, राग–द्वेष, ईर्ष्या मत्सर आदि से ग्रस्त होकर भी अपने कार्यों में प्रवृत्त होता है इनसे उसका जीवन पूर्णतः उच्छृंखलित स्वार्थमय तथा पाशविक बन जाता है। उक्त वृत्तियों पर अंकुश लगाकर व्यक्ति के जीवन को नियमित एवं पवित्र करने के लिए ही पतंजलि ने योगदर्शन के प्रारम्भ में ही यम–नियमों का उल्लेख किया है।

यम पद 'यमु उपरमे' धातु से बना है। इसका प्रयोजन ही उपरत करना है। व्यक्ति को असत्य हिंसा, चोरी, दुराचार आदि अनैतिक एवं समाज विरोधी कार्यों से उपरत करना यमों का उद्देश्य है। यम पांच हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह। इनमें अहिंसा प्रमुख है। यदि मेरे किसी भी कार्य से वचन से किसी प्राणी को किसी प्रकार का कष्ट हो तो वह हिंसा ही है। हिंसा का अर्थ किसी के प्राण लेना ही नहीं है अपितु वाणी अथवा कार्य से किसी का अप्रिय आचरण करना भी हिंसा ही है। इसके अनेक प्रकार तथा क्षेत्र हो सकते हैं। उन्हें दृष्टि में रखकर ही व्यास जी ने हिंसा के 80 भेद किए हैं इनमें कृत कारित तथा अनुमोदित भेद प्रमुख हैं। व्यास जी अहिंसा का स्वरूप बतलाते हए कहते हैं – तत्राहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनाभिद्रोहः। यो. सू. 2/30 व्या. भा.

व्यास जी के अनुसार तो अहिंसा की सिद्धि के लिए ही दूसरे यमों का प्रतिपादन किया गया है इस प्रकार अहिंसा ही प्रमुख यम है।

अहिंसा को सर्वप्रमुख कहने का कारण यह है कि हमारे जीवन में अनेक रूपों में हिंसा व्याप्त रहती है। किसी को कटु वचन कहना भी हिंसा है किसी का किसी प्रकार से अपकार या अपमान आदि करना भी उसकी हिंसा ही है। हिंसा ईर्ष्या, द्वेष तथा विरोध पर आधारित होती है। इनके कारण ही व्यक्ति अपने विरोधी की वैचारिक या शारीरिक हानि तथा हत्या तक करता है। यह हिंसा ही है। इसका एक स्वरूप यह है कि धन की तृष्णा में व्यक्ति अनेक प्रकार के अनीति पूर्ण कार्य करता है दूसरों को धोखा देता है मिथ्या बोलता है तथा पर धन हानि की चेष्टा करता है। यह सब हिंसा का ही व्यापार है क्योंकि ऐसे आचरण से किसी न किसी को तो कष्ट होता है तथा कष्ट देना ही हिंसा है। इसे ही व्यास जी ने उपघात कहा है हिंसा के द्वारा ही मांसाहारी प्राणी मांस प्राप्त करते हैं। यह तो स्पष्ट रूप में ही हिंसा है।

अहिंसा का सामाजिक एवं राष्ट्रीय क्षेत्र में भी बहुत यागदान है। आज समाज एवं राष्ट्र में सर्वत्र हिंसा व्याप्त है। यह हिंसा धर्म, जाति तथा राष्ट्रीयता के आधार पर भी की जाती है। एक धर्म वाला दूसरे धर्म वाले पर अत्याचार करता है उसका उत्पीड़न यहाँ तक कि हत्या भी कर देता है। इसी प्रकार एक जाति वाले दूसरी जाति वाले को नष्ट करना चाहते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ऐसा होता है। इस प्रकार हिंसा की वृत्ति के कारण ही जातीय, राष्ट्रीय तथा धार्मिक संघर्ष उत्पन्न होते हैं। कभी–कभी तो ये उन्माद का रूप भी धारण कर लेते हैं। अहिंसा के द्वारा ही इन सब पर नियंत्रण पाया जा सकता है। अहिंसा व्यक्ति को वैरभाव से सर्वथा रहित कर देती है। अहिंसक व्यक्ति के मन में प्रतिशोध की भावना नहीं हो सकती। पतंजलि तो कहते हैं कि अहिंसक व्यक्ति की सन्निधि में रहने वाले प्राणी भी वैरभाव छोड़ देते हैं।

(2) सत्य :– अहिंसा के समान सत्य भी वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के लिए अनिवार्य है। सामाजिक व्यक्ति पग–पग पर असत्य का व्यवहार करते हैं। सत्य का क्षेत्र केवल बोलने तक ही सीमित नहीं है अपितु यह तो ऐसा तत्त्व है जो हमारे सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त रहता है। किसी के साथ छल प्रपंचपूर्वक किया गया गलत व्यवहार भी असत्य ही कहलायेगा। की गई प्रतिज्ञा को समय पर पूर्ण न करना भी असत्य ही है। व्यास जी ने असत्य का सम्बन्ध न केवल मिथ्या बोलने से ही माना है अपितु हमारे सत्य वचन से भी यदि प्राणियों का उपघात होता हो तो वह वाणी सत्य नहीं मानी जायेगी।

इस प्रकार सत्य न केवल हमारी वाणी तक ही सीमित है, अपितु यह तो हमारे सम्पूर्ण व्यवहार का नियामक है न केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही अपितु सामाजिक स्तर पर भी सत्य समाज का नियंत्रक एवं संशोधक है।

(3) अस्तेय :– यमों में तृतीय स्थान अस्तेय का है। यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है। व्यास जी शास्त्रीय आज्ञा के विरुद्ध दूसरों का धन लेने को स्तेय अर्थात् चोरी कहते हैं। इसलिए अन्यों के पदार्थों में स्पृहा = इच्छा न रखना है। अस्तेय एकान्त में साधना करने वाले योगी के लिए स्तेय या चोरी का अवकाश बहुत कम है, किन्तु सामाजिक जीवन में तो यह पदे–पदे लक्षित होता है। अपनी आय के अनुसार सरकार को निर्धारित टैक्स न देना भी चोरी है। 50 प्रतिशत से भी अधिक लोग ऐसा करते हैं। इसीलिए दो नम्बर के खाते भी रखते हैं। काला धन जमा रखते हैं जिस पर टैक्स देना तो दूर, उसका पता भी सरकार को नहीं होता। छोटे कर्मचारी से लेकर उच्च पदस्थ अधिकारी तक अनेक रूपों में झूठे बिल देकर सरकार से पैसा ऐंठते रहते हैं। इनमें यात्रा बिल, मेडिकल बिल तथा अन्य वस्तुओं के क्रय–विक्रय सम्बन्धी बिल सम्मिलित है। कई विभाग तो ऐसे भी हैं कि सरकार द्वारा विभाग को जनकार्यों के लिए आवंटित राशि ही हड़प करके झूठे बिल से उस धन का क्रय दिखला देते हैं। वेतन के अनुसार अपने कार्य को पूर्णतः न करना भी चोरी ही है। यह सब राष्ट्रीय व सामाजिक चोरी हम सबके जीवन में व्याप्त है। ऐसा राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है तभी तो स्व. राजीव गांधी जी ने कहा था कि जनता को सरकार द्वारा आवंटित धन का 20 प्रतिशत ही मुश्किल से मिलता है। 80 प्रतिशत तो बीच में ही खाया जाता है। यह एक ईमानदार प्रधानमंत्री की स्वीकारोक्ति थी।

देश में दिन–प्रतिदिन होने वाले बड़े–बड़े घोटाले इसी स्तेयवृत्ति का ही परिणाम है। विडम्बना तो यह है कि आज व्यक्ति ऐसे कार्यों में न शर्म महसूस करता है न ही दण्ड का भय, क्योंकि पता है कि येन–केन प्रकारेण सभी तो इसमें लिप्त है। देश का कल्याण तभी हो सकता है जबकि वह अस्तेय वृत्ति को धारण करे।

(4) ब्रह्मचर्य :– यमों में चतुर्थ अंग ब्रह्मचर्य है। यह भी सम्पूर्ण समाज का ही नियामक है न केवल योगाभ्यासी व्यक्ति का ही ब्रह्मचर्य की शिक्षा के अभाव में ही अपहरण तथा बलात्कार आदि की घटनाएँ घटती हैं। इनमें हत्या तक भी कर दी जाती है। यदि राष्ट्रवासी ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे तो ये समस्याएँ अपने आप ही समाप्त हो जायेंगी। अथर्ववेद में इसीलिए कहा गया है कि राजा ब्रह्मचर्य के द्वारा ही राष्ट्र की रक्षा करता है। समाज में ही नहीं, अपितु आज तो शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं में भी ब्रह्मचर्य का अभाव है जबकि वेद कहता है – "आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिण मिच्छते'। आज जनसंख्या वृद्धि चिन्ता का विषय होता जा रहा है। अनेक अप्राकृतिक साधन इसे नियंत्रण करने के लिए अपनाये जा रहे हैं। सरकार इन पर पर्याप्त धन खर्च कर रही है किन्तु सफलता तो मिल नहीं रही है, इसके स्थान पर भोग विलास की प्रवृत्ति को अवश्य ही बढ़ावा मिल रहा है। जनता में ब्रह्मचर्य का प्रचार करके जहां एक ओर इस समस्या पर काबू पाया जा सकता है वहीं दूसरी ओर अनाचार दुराचार और सामाजिक अपराधों को भी दूर किया जा सकता है। यहां यह बात भी ध्यान रख लेनी चाहिए कि वाचस्पति मिश्र केवल जननेन्द्रिय के संयम को ब्रह्मचर्य नहीं मान रहे अपितु उनके अनुसार यह अन्य सभी इन्द्रियों के संयम के उपलक्षणार्थ हैं।

(5) अपरिग्रह :– नियमों में पंचम अंग अपरिग्रह है। व्यास जी के अनुसार विषयों में अर्जन, रक्षण, क्षय, संग तथा हिंसा आदि दोष लगे रहते हैं। इन दोषों को देखते हुए विषयों का ग्रहण न करना ही अपरिग्रह कहलाता है। सांसारिक व्यक्ति विषयों तथा उनके साधनभूत पदार्थों को ही सुखकर मानते हुए इनके ग्रहण में तत्पर रहते हैं। इसी के परिणामस्वरूप ही वे विविध क्लेशों में ग्रस्त रहते हैं। विषयों का अर्जन वस्तुतः कठिन कार्य है। अर्जित की रक्षा तो उससे भी कठिन है। इसी को योग तथा क्षेम नाम से ही कहा गया है। विषयों के

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य जगत के महान संन्यासी युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के छोटे भाई

श्री ईश्वर सिंह आर्य का देहावसान

आर्य जगत् के महान त्यागी, तपस्वी संन्यासी युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के छोटे भाई और आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ईश्वर सिंह आर्य का गत दिनों हृदयगति रूक जाने से 80 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उनकी अन्त्येष्टि उनके पैतृक गांव सुंडाना, जिला–रोहतक, हरियाणा में पूर्ण वैदिक रीति से की गई। उनकी अन्त्येष्टि में ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र आर्य, अजयपाल आर्य, बहन प्रवेश आर्या एवं बहन पूनम आर्या आदि ने मंत्र पाठ एवं यज्ञ सामग्री आदि की समुचित व्यवस्था कर अन्त्येष्टि सम्पन्न कराई।

अन्त्येष्टि में श्री रणवीर सिंह ढाका एडवोकेट, श्री रमेश खटक विधायक तथा अनेक गणमान्य महानुभावों ने सम्मिलित होकर दिवंगत श्री ईश्वर सिंह जी को अन्तिम विदाई दी। श्री ईश्वर सिंह जी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के छोटे भाई थे। उनके अतिरिक्त उनके दो भाई सर्वश्री ओम प्रकाश एवं श्री राजपाल एवं दो बहनें श्रीमती मूर्ति देवी तथा श्रीमती वीरमति आर्या हैं। श्री ईश्वर सिंह आर्य अपने पीछे दो पुत्र तथा भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। उनके बड़े सुपुत्र श्री यज्ञवीर जी ने उनके पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी। उनके छोटे सुपुत्र श्री देववीर जी अन्त्येष्टि स्थल पर सभी पारिवारिकजनों के साथ उपस्थित रहे।

श्री ईश्वर सिंह जी की स्मृति में शांति यज्ञ तथा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 10 जून, 2019 को प्रातः 9 बजे उनके पैतृक गांव सुंडाना में किया गया। श्रद्धांजलि सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, उत्तर प्रदेश के पूर्व गन्नामंत्री स्वामी ओमवेश जी, वैदिक विद्वान श्री आर्षव्रत शास्त्री झज्जर, पूर्व विधायक श्री अजीत सिंह एडवोकेट, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी, स्वामी इन्द्रवेश व्यायामशाला के संचालक श्री प्रदीप कुमार आर्य आदि ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा से पूर्व सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में शांति यज्ञ किया गया जिसमें श्री ईश्वर सिंह जी के बड़े सुपुत्र श्री यज्ञवीर आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रवेश मुख्य यजमान बने। उनके अतिरिक्त श्री ईश्वर सिंह जी के छोटे भाई श्री ओम प्रकाश तथा उनकी धर्मपत्नी एवं उनके भतीजे श्री युद्धवीर तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विजय भी यजमान के रूप में यज्ञ में सम्मिलित हुए।

श्री ईश्वर सिंह आर्य बड़े ही साहसी एवं संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी थे। बचपन से ही पिता का साया सिर से उठ जाने एवं बड़े भाई श्री इन्द्र सिंह (स्वामी इन्द्रवेश) द्वारा गृह त्यागकर संन्यास ले लेने के बाद पूरे परिवार का दायित्व छोटी उम्र में ही अपने ऊपर लेकर जिस सूझ–बूझ तथा साहस के साथ श्री ईश्वर सिंह जी ने परिवार को संभाला तथा अपने बच्चों को पढ़ा–लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा किया तथा भाई एवं बहनों की शादी की और पूरे परिवार को सक्षम बना दिया, इससे उनके व्यक्तित्व की मजबूती का परिचय मिलता है। वे सुलझे हुए सामाजिक कार्यकर्ता थे तथा आर्य समाज के कार्यक्रमों में तन–मन–धन से सहयोग देते थे।

गाँव तथा अपने क्षेत्र में एक पंचायती के रूप में उनकी प्रतिष्ठा थी। जब कभी भी सामूहिक रूप से समाज में किसी विशेष समस्या पर विचार–विमर्श तथा निर्णय लेना होता था तो उसमें श्री ईश्वर सिंह आर्य की उपस्थिति आवश्यक होती थी। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त भव्य तथा प्रभावशाली था। लगभग 6.25 फुट की ऊँचाई तथा विशाल डील–डौल से युक्त शरीर सिर पर अत्यन्त आकर्षक पगड़ी और धोती–कुर्ता उनकी विशेष पहचान थी। ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व एवं सामाजिक कार्यकर्ता का देहावसान समाज की अपूर्णीय क्षति है। यह उद्गार स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धांजलि सभा में व्यक्त करते हुए श्री ईश्वर सिंह आर्य को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना देकर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वे उनको शक्ति प्रदान करें।

इस अवसर पर स्वामी ओमवेश जी ने श्री ईश्वर सिंह आर्य को एक महान आत्मा बताते हुए कहा कि केवलानन्द निगम आश्रम गंज, बिजनौर के नवनिर्मित अस्पताल के उद्घाटन के अवसर पर मैं ईश्वर सिंह जी को आमंत्रित करना चाहता था किन्तु वे हमें पहले ही छोड़ कर चले गये। इसका मुझे अत्यन्त कष्ट है। उन्होंने परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शांति की कामना की। श्रद्धांजलि सभा के उपरान्त श्री यज्ञवीर आर्य ने अपने पिता की स्मृति में आर्य समाज की कई संस्थाओं को दान भी दिया।

ओ३म्

स्वामी रुद्रवेश भजनोपदेशक महाविद्यालय

स्थान :– गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदों–126112, जीन्द (हरियाणा)

ईमेल :– sswaminityanand@gmail.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती

गुरु ब्रह्मानन्द

स्वामी भीष्म

स्वामी रुद्रवेश

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि आजादी आन्दोलन के महान कवि एवं वेद प्रचारक (गायक) स्वामी भीष्म जी महाराज के सुयोग्य एवं गायक शिष्य श्रद्धेय स्वामी रुद्रवेश जी के नाम (स्मृति) में एक भजनोपदेशक महाविद्यालय सफीदों, जीन्द में प्रारम्भ किया जा रहा है।

आर्य जगत् में लम्बे समय से भजनोपदेशक विद्यालय की कमी आर्यों के हृदय में खटक रही है, हमने आपके विश्वास और सहयोग के बल पर इस अति महत्त्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प लेकर यह पुनीत कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है, स्थान सीमित है, शीघ्र सम्पर्क करें।

इस भजनोपदेशक महाविद्यालय का उद्घाटन समारोह गुरु पूर्णिमा 16 जुलाई, 2019 को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक रहेगा, जिसमें आर्य समाज के राष्ट्रीय विद्वान्, आर्य संन्यासी एवं नेता पहुँच रहे हैं। सभी सक्रिय कार्यकर्ता सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक

ब्रह्मचारी रामस्वरूप	स्वामी नित्यानन्द	पं. रामनिवास आर्य भजनोपदेशक
प्रधान	संचालक	संयोजक
9416062288	8053662657	9416437317

आर्य समाज मोहाली, चण्डीगढ़ का 17वाँ वार्षिकोत्सव एवं आर्य भवन का लोकार्पण समारोह सफलता के साथ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया आर्य भवन का उद्घाटन

आर्य समाज मोहाली चण्डीगढ़ का 17वाँ वार्षिकोत्सव गत् 9 जून, 2019 को उत्साह एवं सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के मंत्री मेजर विजय आर्य के नव–निर्मित आर्य भवन, एच.एम.–42, फेज–2, मोहाली का उद्घाटन भी सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से कराया गया। उत्सव में प्रातः 10 से 11 बजे तक पण्डित दाऊ दयाल के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ उसके पश्चात् एक भजन सुश्री नम्रता सोनी ने प्रस्तुत किया और अटलांटिका (अमेरिका) से पधारे दो बच्चों चि. वीर गम्भीर तथा चि. अर्व गम्भीर द्वारा विशेष प्रस्तुति दी गई जिसे श्रोताओं ने अत्यन्त रोचकता के साथ सुना। 11.30 से 12.30 बजे तक आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक के सुपुत्र श्री दिनेश पथिक के भजनों का कार्यक्रम चला। उन्होंने अत्यन्त रोचक तथा मनमोहक भजनों द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। 12.30 से 1.30 बजे तक सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ जिसे श्रोताओं ने दत्तचित्त होकर सुना।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आर्य समाज राजपुरा टाऊन के संरक्षक श्री अशोक छावड़ा तथा आर्य समाज सैक्टर–22 चण्डीगढ़ के संरक्षक श्री अशोक पाल जग्गा एडवोकेट को सम्मानित किया गया। विशेष अतिथि के रूप में श्री विजय आर्य प्रधान आर्य समाज राजपुरा टाऊन, श्रीमती मीना कालड़ा, प्रभारी पतंजलि योग शिविर, श्रीमती मीना आर्या मंत्राणी आर्य समाज केशवपुरम दिल्ली, श्री राजकुमार आर्य आर्य समाज सैक्टर–32, श्री विशेष शर्मा, श्री विजय मेहता प्रधान आर्य समाज सैक्टर–32, श्री अशोक आर्य पंचकुला, श्री अशोक आर्य एडवोकेट बहल हरियाणा, श्री यशपाल उपदेशक, सुश्री कविता आर्या भिवानी, श्री सुशील भाटिया आदि विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे हुए थे। स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी सच्चिदानन्द जी यमुनानगर, पंजाब विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र अलंकार, डॉ. नवीन आर्य अमृतसर, श्री वेदमुनि जी ज्वालापुर आदि भी कार्यक्रम में विराजमान थे।

इस अवसर पर डॉ. नवीन आर्य ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि जब तक हम योग एवं आयुर्वेद को नहीं अपनायेंगे तब तक हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता। उन्होंने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अत्यन्त उपयोगी सूत्र बताकर श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। कार्यक्रम में चण्डीगढ़ के कई पुरोहितों तथा महिलाओं को सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने सारगर्भित तथा विद्वतापूर्ण व्याख्यान में यज्ञ की व्यवहारिक व्याख्या करते हुए कहा कि संसार का प्रत्येक श्रेष्ठ कर्म यज्ञ की श्रेणी में आता है। उन्होंने कहा कि यज्ञ कुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित कर और उसमें घृत सामग्री की आहुति देकर जो देव यज्ञ किया जाता है वह पर्यावरण की शुद्धि और अपने जीवन में समर्पण एवं त्याग की भावना उत्पन्न करने का एक सर्वोत्तम कार्य है। स्वामी जी ने कहा कि जीवन में अन्य परोपकार, सेवा और सहयोग की भावना से किये जाने वाले समस्त कार्य भी यज्ञ ही कहलाते हैं। अतः हमें अपने जीवन में यज्ञीय भावना को मूर्त रूप देना चाहिए। गरीबों की मदद करना, असहायों की सहायता करना, देश एवं समाज के लिए बलिदान देना, माता–पिता, गुरु आदि की सेवा और सुश्रुषा करना, पर्यावरण को शुद्ध एवं सुरक्षित रखते हुए संसार के समस्त प्राणियों के प्रति करूणा, दया एवं सहृदयता का भाव हृदय में रखना यज्ञ कहलाता है। स्वामी जी ने कहा कि दुर्भाग्य से आज लोगों के जीवन से यज्ञीय भावना समाप्त होती जा रही है। जिसे पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है।

इस पूरे आयोजन की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री मधुकर कोड़ा एवं संयोजन मेजर विजय आर्य ने किया। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि वर्मा ने अपना पूरा सहयोग देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

आर्य समाज राजपुरा टाऊन, पटियाला (पंजाब) में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी व्याख्यान

आर्य समाज के पदाधिकारियों ने किया स्वामी जी का जोरदार स्वागत

आर्य समाज राजपुरा टाऊन, पटियाला, पंजाब में 9 जून, 2019 को प्रातः 8.30 से 9.30 बजे तक सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी व्याख्यान हुआ जिसमें सैकड़ों आर्यजनों ने भाग लेकर ज्ञान लाभ प्राप्त किया। आर्य समाज राजपुरा टाऊन के नव–निर्मित प्रधान श्री विजय आर्य के विशेष आग्रह तथा पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज की प्रेरणा से सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। स्वामी जी के आर्य समाज में पहुंचने पर पदाधिकारियों ने माल्यार्पण द्वारा जोरदार स्वागत किया। बाद में उन्हें स्मृति चिन्ह तथा शॉल देकर उनका अभिनन्दन किया गया। स्वामी जी से पूर्व आर्य समाज के धर्माचार्य पं. ब्रह्मदत्त शास्त्री का भी प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

अपने व्याख्यान में स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवन की सार्थकता एवं सफलता विषय पर अनेक दृष्टान्त तथा उदाहरण देकर बताया कि पुरुषार्थ चतुष्टय रूपी मनुष्य जीवन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि हम धर्म के सच्चे स्वरूप को समझने का प्रयास करें। धर्म के सच्चे स्वरूप को समझने पर हमें अपने जीवन में विशेष मार्ग दर्शन मिलेगा तथा उसके द्वारा हम धर्मानुसार ही अर्थ का उपार्जन करेंगे और धर्मानुसार ही अपनी कामनाओं अर्थात् अपने मनोरथ सिद्ध कर पायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि मोक्ष प्राप्त करना मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है और उसके लिए यह आवश्यक है कि धर्मानुसार आचरण करते हुए अपने जीवन को उन्नति की ओर ले जाया जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वर्तमान समय में धर्म के वास्तविक स्वरूप के बदले बाह्य आडम्बरों, कर्मकाण्डों एवं रूढ़ियों को ही धर्म माना जा रहा है जिससे मानवता की अत्यन्त हानि हो रही है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक मनुष्य अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए धर्म को आचरण में लाना प्रारम्भ करे और अपनी आत्मा को सात्विकता से ओत–प्रोत कर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़े।

आर्य समाज राजपुरा टाऊन के मंत्री श्री नीरज आर्य ने मंच का संचालन किया। इस अवसर पर कुमारी संन्ध्या छावड़ा को आई.ए.एस. बनने पर आर्य समाज की ओर से सम्मानित किया गया। स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें शॉल एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में आर्य समाज के संरक्षक श्री विद्यारत्न तथा कार्यकर्ता श्री राजेश्वर आर्य, श्री ओ.पी. आर्य, सहमंत्री श्री विजय आर्य, श्रीमती सुषमा सेतिया, श्रीमती इंदिरा ग्रोवर, श्री ज्ञानचन्द्र आर्य आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। स्त्री आर्य समाज की पूर्व प्रधाना एवं स्वाध्यायशील माता श्रीमती सुमन चावला का उनके निवास पर कुशल क्षेम पूंछकर स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी सच्चिदानन्द जी मोहाली चण्डीगढ़ पहुंचे। प्रातः आर्य समाज के प्रधान श्री विजय आर्य के निवास पर नाश्ते की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी सच्चिदानन्द जी ने नाश्ता करने के बाद परिवार को अपना आशीर्वाद भी प्रदान किया।

आंखों का रखें ख्याल खूबसूरती का है सवाल

आंखें हमारी खूबसूरती को चार- चांद लगाती हैं। ये आंखें ही होती हैं, जो बिना बोले हमारे मन के सभी दर्द व खुशी को बयान कर देती हैं। कुछ शब्दों में कहा जाए तो आंखें हमारे मन का आईना होती हैं और अचानक इस आईने में अगर कोई दरार आ जाए तो चेहरा खराब दिखने लगता है। व्यक्ति के स्वभाव के पूरे हाव- भाव ही बिगड़ने लगते हैं। आंखें हमारे शरीर का सबसे नाजुक हिस्सा हैं और किसी भी मौसम का आना और जाना सबसे पहले आंखों को ही प्रभावित करता है। गर्मी के मौसम ने लगभग दस्तक दे दी है। गर्मी का नाम सुनते ही धूप, बेचैन करने वाली गर्मी, चिपचिपाहट, धूल, मच्छरों का नाम दिमाग में आ जाता है। साथ ही, कई बीमारियां भी हमें आहत करने के लिए हथियार लेकर खड़ी होती हैं। तपती गर्मी व धूप में शरीर के कई अंगों पर मौसम की मार पड़ती है जैसे त्वचा, बाल आदि। इस कतार में भला आंखें कैसे पीछे रह सकती हैं? आंखों पर तो गर्मी का बेहद दुष्प्रभाव देखने को मिल सकता है। आंखों की कई बीमारियां जैसे फ्लू, सूजी और नकी लाल आंखें, शुष्क आंखें, कम्प्यूटर विजन सिंड्रोम आदि अधिक देखने को मिलता है। दरअसल, अधिक गर्मी में कीटाणु ज्यादा पनपते हैं और लोगों को अपनी चपेट में लेते हैं। आंखों का संक्रमण और अधिकतर बीमारियों का कारण कीटाणु और जीवाणु ही होते हैं

गर्मियों में बढ़ते हुए प्रदूषण तथा कम्प्यूटर पर लंबे समय तक काम करने की वजह से शुष्क आंखों की परेशानी बढ़ने लगती है। इस समस्या के दौरान आंखों में खुजली या जलन होने लगती है। आंखें प्राय कीचड़ से भर जाया करती हैं। इसी तरह, अपने काम के सिलसिले में प्रदूषित क्षेत्रों से प्रतिदिन गुजरने वालों के बीच भी एलर्जी की समस्या और

शुष्क आंखों के लक्षण आम हैं। नाइट्रिक ऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड औ र सल्फर डाइऑक्साइड जैसे प्रदूषण फैलाने वाले तत्वों की वजह से आंखों की समस्याएं और बढ़ जाती हैं। आंसू जो आंखों को तरल रखते हैं, वे जल, वसायुक्त तेल, प्रोटीन, इलेक्ट्रोलाइट तथा बैक्टीरिया से मुकाबला करने वाले तत्वों का मिश्रणहोते हैं। वातावरण का प्रदूषण आंसुओं की इस कोमल परत को नुकसान पहुंचाती है जिसके परिणामस्वरूप यह बहुत ही असंतुलित हो जाती है।

खतरा

कंजंक्टिवाइटिस गर्मियों में आम बीमारी होती है। इसके दौरान आंखें सूज जाती हैं। इनमें बराबर दर्द बना रहता है और आंखों से पानी आता रहता है। आंखों की यह सब संक्रमण संबंधित समस्याएं बहु त ही तेजी से आसपास के लोगों तक पहुंच जाती हैं। एक-दूसरे को छूने, आंखों में देखने से ही यह संक्रमण किसी को भी दुष्प्रभावित कर सकता है । मोतियाबिंद भी गर्मियों में अक्सर लोगों को परेशान करता है।

क्या करें क्या न करें

ऐसी किसी बीमारी की चपेट में आने से पहले आप अपना और आंखों का खास ख्याल रखें। यदि हम कुछ बातों पर विशेष ध्यान दें तो इन सब समस्याओं को दूर कर सकते हैं।

आंखों के किसी भी संक्रमण से प्रभावित होने के बाद साफ-सफाई का खास ख्याल रखें।

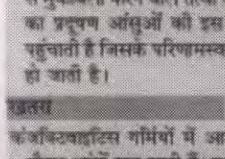

आंखों को बार-बार हाथ से न छूएं और न ही रगड़ें। बार-बार हाथ धोयें।

पीड़ित द्वारा इस्तेमाल की हुई किसी भी चीज को अपने संपर्क में न लाएं। अपना चश्मा किसी और को पहनने के लिए न दें।

चकाचौंध करती धूप में अल्ट्रावायलेट किरणें आप की आंखों पर सीधे तौर से प्रहार करती हैं। इसीलिए धूप में जाते समय छाते का उपयोग करें और आंखों पर बड़ा धूप का काला चश्मा पहनकर रखें, जिससे आप की आंखों का बचाव हो सके। धूप में ही नहीं बल्कि बादलों के मौसम में भी चश्मा लगाकर ही बाहर निकलें।

अगर आप पावर लेंस लगाते हैं तो भी आप को धूप का चश्मा पहनना होगा ताकि अल्ट्रावायलेट किरणें आंखों को नुकसान न पहुंचा सकें। हमेशा ऐसा धूप का चश्मा पहनें जो आप की आंखों को अल्ट्रावायलेट किरणों से बचा सके।

आंखों के लिए स्वस्थ भोजन और अच्छी नींद दोनों ही बेहद आवश्यक हैं। खाने में हरी सब्जियां जैसे पालक, गाजर, बथुआ, सरसों, अंकुरित अनाज आदि का इस्तेमाल बढ़ाएं।

दिन में कम से कम दो लीटर पानी पिएं ताकि आप के शरीर की गंदगी बाहर निकले और नमी बनी रहे, जो आंखों के लिए जरूरी है।

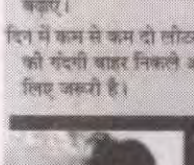

आंखों पर दिन में कई बार ठंडे पानी की छींटे मारें। आंखों पर खीरे के टुकड़े रुई के फाहे में गुलाबजल डालकर आंखों पर रखें। इससे आंखों को ताजगी मिलेगी।

आंखों में ऐसी दवाइयां डालें जो आंखों को शुष्क होने से रोकें और संक्रमण न पैदा होने दें।

इस प्रकार अपनी आंखों के प्रति थोड़ी-सी सजगता बरतने से आंखों को होने वाली परेशानियों से बचा जा सकता है। थोड़ी-सी सावधानी जीवन के सबसे अनमोल उपहार को खोने से बचा सकती है। अतः अपनी इस अनमोल देन को खोने न दें। इसलिए सावधान रहें और आंखों पर विशेष ध्यान दें।

मशरूम हर सीजन में आपको मिल जाएंगे। मशरूम में बहुत सारा फाइबर, फैट और सोडियम होता है। इसका टेस्ट बहुत अच्छा होता है और आपको सेहतमंद भी बनाए रखता है।

गर्मियों में खाइए सेहतमंद सब्जियां

गर्मियों को दूर करने के लिए केवल कोल्ड ड्रिंक पर निर्भर न रहें। इस मौसम में आपको अपनी डाइट का भी खास ख्याल रखना होगा। गर्मियों में ऐसी कई प्रकार की सब्जियां बिकना शुरू हो जाती हैं, जो शरीर से गर्मी को मिटाती हैं और इस मौसम से लड़ने के लिए शरीर को शक्ति प्रदान करती हैं। आज हम आपको बताने जा रहे कि इन गर्मियों के दिनों में आपको किन सब्जियों का सेवन करना चाहिए...

गर्मियों में खीरे की मांग बहुत ज्यादा होती है। इसमें पानी की मात्रा बहुत ज्यादा होती है और कैलोरी बहुत कम।

धनिया को खाने में शामिल करने से शरीर का जितना पानी वाला वजन होता है, वह घट जाता है। धनिया पेट को सही रखता है और किडनी को भी बीमारियों से दूर रखने में सक्षम है।

गर्मियों की डाइट में एवाकाडो को जरूर शामिल करना चाहिए। इसमें हेल्दी वसा होता है, जो कि दिल के लिए अच्छा माना जाता है। साथ ही एवाकाडो त्वचा के लिए भी बहुत अच्छा माना जाता है।

गर्मियों में बैंगन की सब्जी खाने से शरीर में पानी की कमी नहीं होती।

मशरूम हर सीजन में आपको मिल जाएंगे। मशरूम में बहुत सारा फाइबर, फैट और सोडियम होता है। इसका टेस्ट बहुत अच्छा होता है।

गर्मियों में खूब सारा चुकंदर खाइए। इससे शरीर में खून की कमी नहीं होगी

छोटे आकार के प्याज में बहुत सारा एंटीऑक्सीडेंट होता है। खासतौर पर इसमें एंटी-एलर्जिक गुण, एंटी बैक्टीरियल गुण आदि पाए जाते हैं। यह गर्मियों के लिए सबसे अधिक फायदेमंद है।

लौकी में अधिकतर पानी पाया जाता है। इससे आपको गर्मी, पेट की समस्या जैसे एसिडिटी आदि से निपटने की ताकत मिलती है। यह सब्जी डीहाइड्रेशन से बचाती है और शरीर में सोडियम की मात्रा को भी कम नहीं होने देती।

करेला त्वचा से फोड़े, रैश, फंगल इंफेक्शन और दाग को पैदा होने से रोकता है। इससे हाई बीपी और मधुमेह भी काबू में रहता है।

पालक में विभिन्न खनिज लवण जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, लौह तथा विटामिन ए, बी, सी आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह रेशेयुक्त, जलयुक्त होता हैं। इन्हीं गुणों के कारण इसे जीवन रक्षक भोजन भी कहा जाता हैं।

ब्रोकली यह एक सुपर फूड है जिसमें बहुत सारा फाइबर पाया जाता हैं। इसमें बहुत सारा पोषण भी होता है।

फलों से पाएं फिटनेस

फल हमें अपने दैनिक आहार में जरूर शामिल करने चाहिए। फल खाने और फलों का जूस पीने से हमारा स्वास्थ्य भी ठीक रहता है और हमें ताजगी का एहसास भी होता है। फल खाने के क्या-क्या फायदे हैं आइए डालते हैं एक नजर...

पपीता : खाली पेट पपीता खाने से बवासीर की शिकायत दूर होती है। सेंधा नमक, जीरा पाउडर और नींबू के साथ खाने पर कब्ज दूर होती है। महिलाओं के लिए पपीते का रस बहुत लाभकारी होता है इससे उनका बांझपन दूर होता है। लेकिन गर्भावस्था के दौरान पपीता बहुत हानिकारक होता है, क्योंकि इसकी तासीर बहुत गर्म होती है जो गर्भवती महिलाओं के लिए अच्छी नहीं होती। पपीते की पत्तियां भी रामबाण की तरह काम करती हैं, यह कैंसर को दूर करने में बहुत सहायक होती हैं। पपीता वजन कम करने में भी काम आता है।

केला : खाना खाने के बाद केला खाने से भोजन आसानी से पच जाता है। रोज सुबह एक केला और एक गिलास दूध पीने से वजन कंट्रोल में रहता है और बार-बार भूख भी नहीं लगती। केला खाने से हाई ब्लड प्रेशर और यूरीन की समस्या को दूर करने में मदद मिलती है। गर्भावस्था में महिलाओं के लिए केला बहुत अच्छा होता है, क्योंकि यह विटामिन से भरपूर होता है। केले मैश करके बालों में लगाने से बाल नर्म, मुलायम और चमकदार हो जाते हैं। केला बच्चों के लिए बहुत अच्छा होता है, क्योंकि यह अपने आप में ही पूर्ण आहार होता है।

अंगूर : अंगूर फल, मां के दूध के समान पोषक है। फलों में अंगूर सर्वोत्तम माना जाता है। पका हुआ अंगूर तासीर में ठंडा, मीठा और दस्तावर होता है। यह आंखों के लिए हितकर होता है। अंगूर रक्त साफ करने वाला, रक्त बढ़ाने वाला तथा तरावट देने वाला फल है। अंगूर में जल, शर्करा, सोडियम, पोटेशियम, साइट्रिक एसिड, फ्लोराइड, पोटेशियम सल्फेट, मैगनेशियम और लौह तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं। अंगूर हृदय की दुर्बलता को दूर करने के लिए बहुत गुणकारी है। हृदय रोगी को नियमित अंगूर खाने चाहिएं। अंगूर के सेवन से फेफड़ों में जमा कफ निकल जाता है, इससे खांसी में भी आराम आता है। अंगूर जी मिचलाना, घबराहट, चक्कर आने वाली बीमारियों में भी लाभदायक है।

लीची : अन्य फलों की तरह लीची भी पौष्टिक तत्वों का भंडार है। इसमें विटामिन सी, पोटैशियम और शक्कर की भरमार होती है। साथ ही पानी की मात्रा भी काफी होती है। गर्मी में खाने से यह शरीर में पानी के अनुपात को संतुलित रखते हुए ठंडक भी पहुंचाती है। दस लीचियों से हमें लगभग 65 कैलोरी मिलती है।

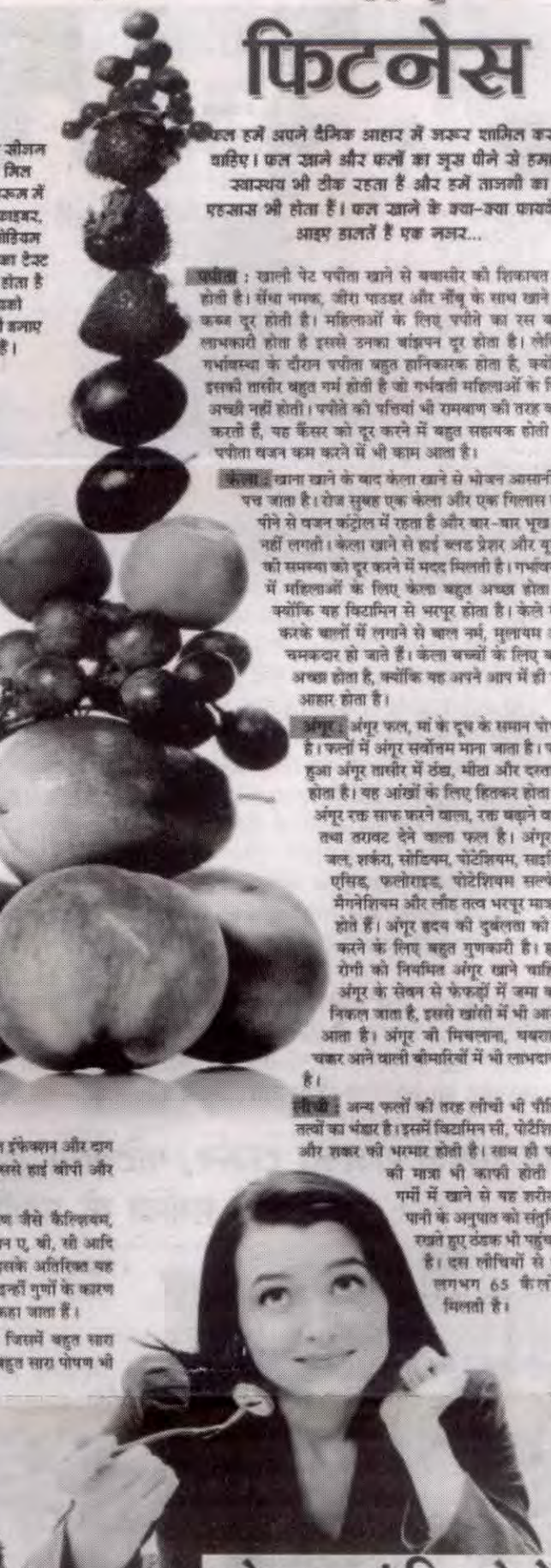

हमेशा जवां दिखने के लिए जरूरी है पूरी नींद

आप अगर हमेशा युवा दिखना है तो आपको पूरी नींद लेनी होगी। अन्यथा आपकी त्वचा समय से पहले बूढ़ी होने लगेगी और आप उम्रदराज नजर आने लगेंगे। यह दावा अमेरिका के यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल्स केस मेडिकल सेंटर के फिजिशियन और वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक शोध में किया गया है। उन्होंने पाया कि नींद त्वचा के कामकाज तथा उसकी उम्र को भी प्रभावित करती है। इसके अनुसार कम नींद लेने वालों की त्वचा समय से पूर्व बूढ़ी होने लगती है और उनमें अल्ट्रावायलट विकिरणों सहित पर्यावरण के अन्य नकारात्मक प्रभावों से जल्द मुक्त होने की क्षमता भी नहीं रहती।यह शोध यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल्स केस मेडिकल सेंटर में त्वचा अध्ययन केंद्र के निदेशक व मुख्य शोधकर्ता एल्मा बैरन के नेतृत्व में हुआ। बैरन ने अपने आंकड़े हाल ही में स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग में हुए इंटरनेशनल इंवेस्टिगेटिव डर्मेटोलॉजी मीटिंग में इफेक्ट्स ऑफ स्लीप क्वालिटी ऑन स्किन एजिंग एंड फंक्शन शीर्षक से पेश किए। बैरन केस वेस्टर्न रिजर्व यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन के त्वचा रोग विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर भी हैं। उन्होंने कहा कि हमारे शोध में पहली बार दिखाया गया है कि कम नींद लेने से त्वचा पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। शोध से, कम सोने वाली महिलाओं की त्वचा के समय से पहले कांतिहीन होने और धूप के संपर्क में आने के बाद उस पर पड़ने वाले असर से निपटने की क्षमता में कमी का पता चलता है।

योग द्वारा दूर हो सकता है पीठ का दर्द

कई लोग ऐसे होते हैं जिन्हें कोई ना कोई बीमारी परेशान करती ही रहती है। चाहे वह कितना भी इलाज क्यों ना करा लें।थक हारकर ऐसे लोगों को साधु-संतों का सहारा लेना पड़ जाता है।इस प्रकार की समस्या भोग रहे लोगों के लिए योग काफी सही और सफलतम साधन बन कर उभरा है।आइए जानते हैं इस बारे कुछ उपयोगी टिप्स।

प्राचीन भारतीय पद्धति योग को लेकर किए गए एक नए अध्ययन से पता चला है सप्ताह में एक बार योग आपको पीठ के निचले हिस्से के दर्द से राहत दिला सकता है।अमेरिका के एक विश्वविद्यालय द्वारा किए गए शोध में अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि सप्ताह में एक बार योग करने से पीठ के दर्द से उसी तरह राहत मिल सकती है और दर्दनाशक दवाओं पर निर्भरता कम हो सकती है। पूर्व के अध्ययनों में कहा गया था कि योग पीठ के निचले भाग में उठने वाले तेज दर्द के इलाज के लिए लाभकारी हो सकता है लेकिन कुछ अध्ययनों में कहा गया है कि यह कुछ खास आबादी के लिए यह उपयोगी है। इस अध्ययन के लेखक द्वारा कहा गया है कि पीठ के निचले भाग में दर्द अक्सर कम आय वाले मरीजों को होता है क्योंकि उनके पास इलाज के लिए न तो पर्याप्त रकम होती है और न ही योग, मालिश या एक्यूपंक्चर जैसे इलाज तक उनकी पर्याप्त पहुंच होती है। उनके अनुसार, अगर ऐसे मरीज सप्ताह में एक बार योग करें तो उन्हें समुचित लाभ हो सकता है। साथ ही दैनिक कामकाज करने की उनकी क्षमता में भी सुधार हो सकता है।

यस्यच्छायाऽमृतम्

विद्यावाचस्पतिः श्री रामदत्त शास्त्री, पक्की सराय, अनूपशहर, बुलन्दशहरम् (उ. प्र.)

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रान्तजनमानस शंकरोऽविरतविततितापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्चाविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था विततो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्थाः इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्द्य, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमैश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

– भारतोदय से साभार

पृष्ठ–3 का शेष

योग की जीवन दृष्टि

अर्जन में हिंसा भी होती ही है चाहे वह वाचिक, मानसिक या शारीरिक किसी भी प्रकार की हो। यह भी दोष ही है। इतना होने पर भी विषय सदा के लिए स्थाई नहीं होते, अपितु वे नश्वर हैं। यही क्षय दोष है। योगी व्यक्ति तो इन दोषों के कारण विषयों को स्वीकार नहीं करता है। सांसारिक कार्य इनके बिना नहीं हो सकते। अतः सांसारिक व्यक्ति सर्वांश में तो इनका त्याग नहीं कर सकता, हाँ इतना अवश्य ही किया जा सकता है कि संसार में रहते हुए तथा सांसारिक कार्य करते हुए भी विषयों का सेवन कम से कम करें तथा अनासक्त भाव से करें। ऐसा करने से जीवन सुखी रहेगा। जीवन को सुखमय बनाने के लिए ही तो विषयों के अर्जन रक्षण आदि किए जाते हैं। यदि इनके प्रति दोष दृष्टि हो तो व्यक्ति अनासक्त भाव से इनका सेवन करेगा। परिणामस्वरूप ऐसा व्यक्ति स्वयं शान्त रहेगा तथा अन्यों को भी शान्ति प्रदान करेगा। क्योंकि इसकी दृष्टि योगयुक्त हो गई है। इस प्रकार योग यम नामक यह प्रथम अंग वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन का संशोधक एवं नियामक है। यही अवस्था नियमों की भी है। नियमों में सर्वप्रथम अंग शौच है।

(1) शौच :– व्यास जी शौच के दो भेद करते हैं :– (क) बाह्य, (ख) आभ्यन्तर। जल–सिद्धि आदि से स्वच्छता तथा भक्षणीय पवित्र पदार्थों का आहार बाह्य शौच है। चित्त के मलों को दूर करके उसे स्वच्छ करना आभ्यन्तर शौच है। मद्यमांसादि अपवित्र पदार्थों के सेवन से चित्तवृत्तियाँ कलुषित होती हैं। इनमें मांस भक्षण का सम्बन्ध जीवों की हत्या से है। बिना जीव हत्या मांस नहीं मिलता यह क्रूर कर्म है। इस सृष्टि में मानव की भांति ही पशु–पक्षियों को भी जीने का अधिकार है। मांसभक्षी उनके इस अधिकार को तो छीन ही लेते हैं, बदले में अपने आप भी नाना शारीरिक एवं मानसिक दोषों से ग्रस्त होते हैं। योग की दृष्टि से प्राणिमात्र के प्रति दयादृष्टि है। वेद भी ऐसा ही कहता है – मित्रस्य चक्षुषाऽहं सर्वाणि भूतानि समीक्षे'। यही दृष्टि उपयुक्त है। शौच का दूसरा अर्थ चित्त के मलों का क्षालन है। हमारे मन में नाना दुर्विचार, दुर्वासनाएँ, दुर्भावनाएँ, राग–द्वेष आदि भरे पड़े हैं। इनसे प्रेरित होकर ही व्यक्ति नाना प्रकार के दुष्कर्म करता है, जिनका दण्ड उसे व्यक्तिगत रूप में तथा पूरे समाज को भी भोगना पड़ता है। आज सर्वत्र यही अवस्था है। चित्त के दूषित होने से आज पूरा समाज ही दूषित हो रहा है। प्रतिदिन होने वाले अपहरण, डाके, लूट–पाट, दुराचार, बड़े–बड़े आर्थिक घोटाले, हत्याएँ आदि इसीलिए हो रहे हैं कि हमारे चित्त विकार ग्रस्त हैं। इन सबसे मुक्ति पाने का एक मात्र उपाय योग ही है। योग के शौच नामक अंग द्वारा यही कार्य किया जाता है।

(2) सन्तोष :– नियमों का दूसरा अंग संतोष है। संतोष का अर्थ है कि आवश्यकता से अधिक साधनों को एकत्रित न किया जाए। आज राष्ट्रवासियों ने संतोष को छोड़ दिया इसीलिए तो सभी लोग नाना भोग पदार्थों के संग्रह में यत्नशील रहते हैं। अपनी तृष्णावश या दूसरों के साथ स्पर्धा में हम ऐसे पदार्थों के संग्रह में यत्नशील रहते हैं जो हमारे लिए सर्वथा अनावश्यक होते हैं। कभी–कभी तो प्रदर्शन मात्र के लिए भी ऐसा किया जाता है। अनावश्यक भोग साधनों को एकत्रित करने के लिए धन चाहिए इसलिए व्यक्ति उल्टे सीधे तरीके से धनप्राप्ति का यत्न करता है। इसके लिए वह मिथ्या भी बोलता है चोरी भी करता है दूसरों को धोखा भी देता है। हत्या अपहरण करता है। खाद्य पदार्थों में मिलावट करता है और तो और ग्रीस तथा यूरिया जैसे विषैले पदार्थों से कृत्रिम दूध बनाकर तथा पशुओं की चर्बी से नकली देशी घी बनाकर जनता के धर्म तथा स्वास्थ्य दोनों को ही नष्ट करता है। यह सब हमारी अति संग्रहित का ही परिणाम है। यदि हम सन्तोषवृत्ति को अपना लें तो हमारे जीवन से बहुत सी बुराईयाँ दूर हो जायेंगी साथ ही हमें अपरिकल्पनीय सुख की प्राप्ति भी होगी जिसका उल्लेख महाभारत में इस प्रकार किया है :–

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।।

(3) तप :– नियमों में तृतीय अंग तप है। व्यास जी द्वन्द्वों के सहन को तप कहते हैं। उन्होंने द्वन्द्वों की गणना भूख–प्यास, शीत–उष्णता, स्थान, आसन तथा मौन आदि के रूप में की है। ये केवल उपलक्षण मात्र है क्योंकि योगी को प्रायः इनका ही सामना करना पड़ता है। इनके अतिरिक्त लौकिक जीवन तो द्वन्द्वों से ही परिपूर्ण है। द्वन्द्व का अर्थ जोड़ा है। जीवन में हमें अनेक प्रकार के द्वन्द्व प्राप्त होते हैं। यथा सुख–दुःख, हानि–लाभ, मान–अपमान, जय–पराजय, हर्ष–शोक आदि। ये द्वन्द्व ही हमारे जीवन को नियमित तथा संचालित किए रहते हैं। इनको सहन करना ही तप है। प्रायः सभी व्यक्तियों को जीवन में ये द्वन्द्व प्राप्त होते हैं। धनी–निर्धन, विद्वान–मूर्ख, राजा–रंक आदि कोई भी इनकी पहुँच से बाहर नहीं है। अन्तर केवल इतना है कि जो व्यक्ति इन द्वन्द्वों को सहन कर लेता है वह अपनी जीवन यात्रा ठीक प्रकार चला लेता है, अन्यथा सहनशक्ति के अभाव में कितने ही लोग आत्महत्या या अन्यों की हत्या तक कर देते हैं। ऐसे कार्यों से बचने के लिए तप अर्थात् सहनशक्ति का होना अनिवार्य है तभी जीवन सुखी होगा।

(4) ईश्वर प्रणिधान :– ईश्वर प्रणिधान नियमों का अंतिम अंग है। व्यास जी परम गुरु परमात्मा में सभी कार्यों के समर्पण को ईश्वर प्रणिधान कहते हैं। यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण तत्व है। जीवन में ईश्वर विश्वास होना ही चाहिए। इसे ही आस्तिकता कहते हैं। सच्चा आस्तिक कभी भी दुष्कर्म नहीं कर सकेगा क्योंकि उसे ईश्वरीय नियमों का भय है। अपने सभी कार्यों को परमेश्वर के ऊपर छोड़कर तो व्यक्ति का जीवन बिल्कुल ही शुद्ध पवित्र बन जायेगा।

इस प्रकार व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को शुद्ध पवित्र तथा नियन्त्रित करने में इन नियमों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज तो न व्यक्ति शुद्ध है न समाज। इसीलिए राष्ट्र भी बुराइयों से आक्रान्त है। योग की दृष्टि व्यक्ति के साथ–साथ पूरे समाज को शुद्ध करने की है।

– पूर्व रीडर, रामजस कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

श्री मन्त्री जी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नयी दिल्ली-110001

अवितरण की दशा में लौटाएँ
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज लोअर बाजार शिमला का 137वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

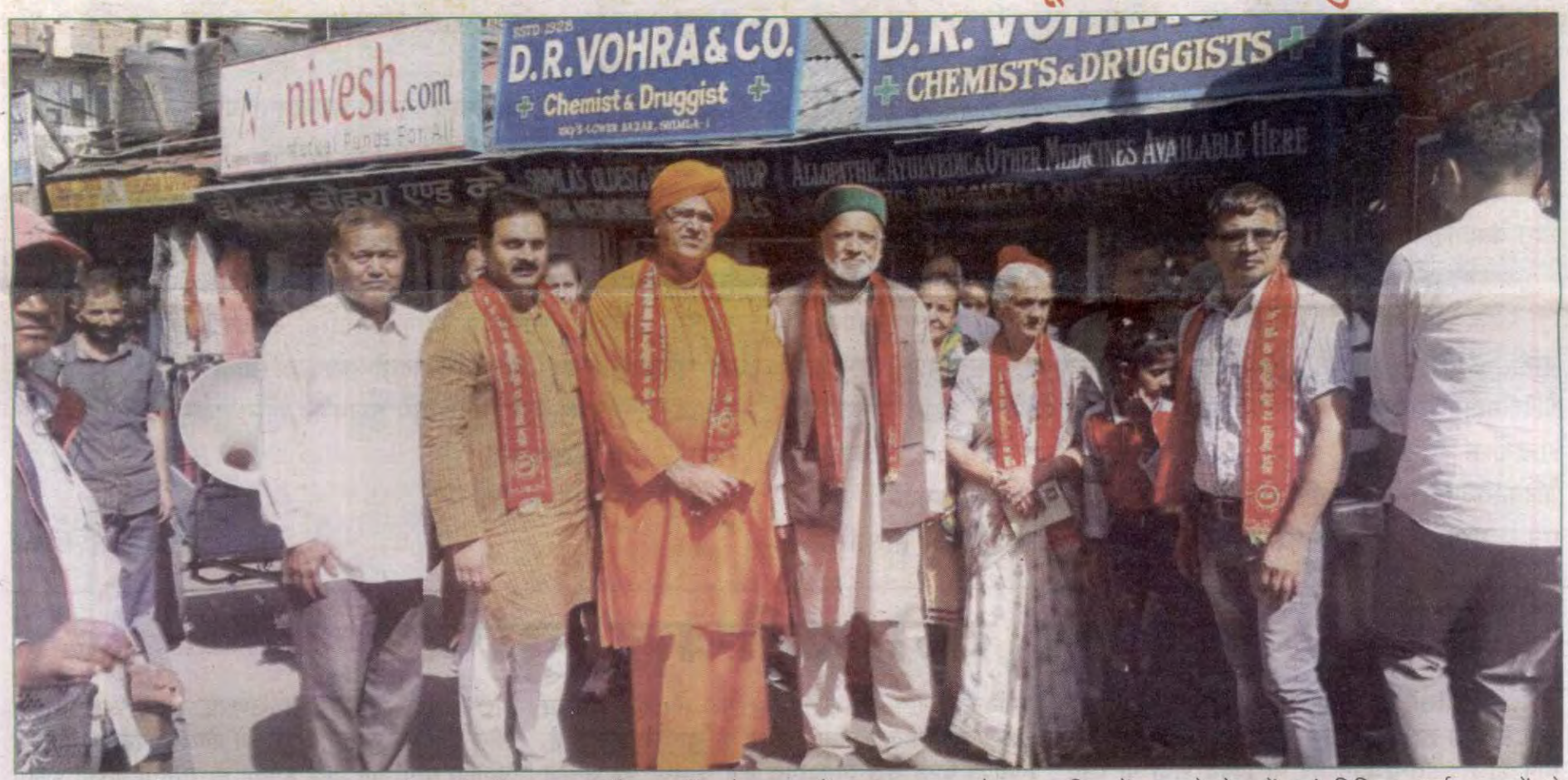

रहने आदि के लिए प्रताड़ित एवं मजबूर की जाती थीं, उन्हें समाज में किसी भी महत्त्वपूर्ण दायित्व के निर्वहन करने का अधिकार नहीं था। बाल–विवाह, सतीप्रथा एवं विधवाओं को आजीवन वैधव्य का कष्ट झेलने की कुप्रथाओं के विरुद्ध महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज की रुढ़ियों को चुनौती दी थी उसके परिणामस्वरूप समाज में यद्यपि पढ़ाई, खेल, सामाजिक एवं राजनीतिक दायित्व तथा अन्य साहसिक कार्यों में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन चुकी है, फिर भी विडम्बना यह है कि भारत में बेटियों को माँ के पेट में ही जन्म लेने से पूर्व ही मार दिया जाता है। अर्थात् कन्या भ्रूण हत्या हो रही है। दहेज के नाम पर प्रतिवर्ष हजारों स्त्रियों को मार दिया जाता है, इससे भी बढ़कर बुरी बात यह है कि बेटी के जन्म लेने को अपशगुन माना जाता है। उसके जन्म लेने पर खुशी मनाने के बदले सारा परिवार शोक मग्न हो जाता है। उसके जन्म लेने पर मिठाई नहीं बांटी जाती, थाली नहीं बजाई जाती, छठी की रात नहीं मनाई जाती, बधाईयाँ नहीं दी जातीं, बल्कि मिट्टी के पुराने बर्तन फोड़कर मन की व्यथा को लोग प्रकट करते हैं। किन्तु लड़का पैदा होने पर लोग परस्पर बधाईयाँ देते हैं, मिठाईयाँ बांटते हैं, थाली बजाते हैं, छठी मनाई जाती है और लाखों रुपये की भेंटें दी जाती हैं। स्वामी जी ने कहा कि लड़कियों के प्रति यह निकृष्ट सोच जब तक नहीं बदलती तब तक हम नारी के गौरव को पुनः स्थापित नहीं कर सकते। इसी प्रकार वेद सम्मेलन के अवसर पर ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर स्वामी आर्यवेश जी ने यह बताया कि दुनिया के समस्त मत–सम्प्रदायों का इतिहास लगभग 3700 वर्ष पुराना है। जबकि इनसाइक्लोपीडिया लन्दन वेदों को सबसे प्राचीन पुस्तक एवं ज्ञान मानता है। वैदिक सिद्धान्त के अनुसार वेद ज्ञान का आर्विभाव सृष्टि के प्रारम्भ में 1 अरब, 96 करोड़, 8 लाख 53 हजार, 120 वर्ष पूर्व चार ऋषियों के हृदय में परमपिता परमात्मा द्वारा दिया गया ताकि अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न होने वाले समस्त मानव समुदाय का वेद ज्ञान के द्वारा उन्नति करने तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का मार्गदर्शन मिल सके।

इस अवसर पर आचार्य महावीर मुमुक्षु ने अपने व्याख्यानों में प्राचीन तथा अर्वाचीन संस्कृतियों का समन्वय करते हुए इस बात पर बल दिया कि हम अपनी प्राचीन संस्कृति को छोड़ चुके हैं जिसे लौटाने के लिए आवश्यक है कि नई तकनीक और तर्कों से नई पीढ़ी के बच्चों को वैदिक संस्कृति एवं वैदिक सिद्धान्तों से परिचित कराया जाये। उनके दिमाग में तर्क के द्वारा सिद्धान्तों को बिठाया जा सकता है जिसके लिए विशाल स्तर पर कार्य होना चाहिए। आचार्य मुमुक्षु जी के व्याख्यान अत्यन्त उच्चकोटि के ज्ञान से परिपूर्ण होने के कारण श्रोताओं पर विशेष रूप से प्रभावी रहे। बीच–बीच में आचार्य रामानन्द जी के वेद, उपनिषद् तथा ब्राह्मण ग्रन्थों की विवेचना से युक्त व्याख्यान होते रहे जिससे उनके पाण्डित्य का परिचय मिलता था। ऋग्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर आचार्य रामानन्द जी का प्रभावशाली व्याख्यान यज्ञ के सम्बन्ध में हुआ। उन्होंने बताया कि यज्ञ वह नौका है जिसमें बैठकर मनुष्य अपने जीवन की वैतरणी को पार कर सकता है। यज्ञ के द्वारा व्यक्ति की मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती है और वह मनुष्य जीवन को सफल बना सकता है। आचार्य जी ने सभी वेदपाठी छात्राओं को यजमानों को एवं यज्ञ की व्यवस्थापिका अध्यापिकाओं को अपनी ओर से आशीर्वाद एवं प्रसाद प्रदान कर उनके यशस्वी जीवन की मंगल कामना की।

आचार्य रामानन्द जी ने वार्षिकोत्सव में पधारे सभी विद्वानों, भजनोपदेशकों एवं विभिन्न आर्य समाजों से पधारे आर्यजनों का भी आभार व्यक्त किया। विशेष रूप से स्वामी आर्यवेश जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आचार्य रामानन्द जी ने कहा कि स्वामी जी की उदार एवं स्नेहमयी स्वभाव से हम अत्यन्त प्रभावित हैं और हम उनके नेतृत्व में आर्य समाज के भविष्य को सुरक्षित देखते हैं। आर्य समाज के मंत्री श्री हृदयेश आर्य ने एक ही बात पर विशेष बल दिया और कहा कि जब तक हमारा देश और देश के नेता वेद के आधार पर कार्य करना शुरू नहीं करेंगे तब तक भारत विश्वगुरु के स्थान को प्राप्त नहीं कर सकेगा। उन्होंने तर्क देकर बताया कि भारत जब विश्वगुरु था तब सर्वत्र वैदिक मान्यताओं का वर्चस्व कायम था, किन्तु आज ऐसा नहीं है।

इस त्रिदिवसीय उत्सव की व्यवस्था में आर्य समाज के पदाधिकारियों के अतिरिक्त आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला की प्रधानाचार्या श्रीमती तनु आर्या, श्रीमती कौशल्या वर्मा, तथा उनकी समस्त अध्यापिकाओं एवं कार्यकर्ताओं ने अत्यन्त पुरुषार्थ करके कार्यक्रम को सफल बनाया। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र टण्डन, श्री रमाकान्त (लुधियाना), श्री राजपाल(चण्डीगढ़), मेजर श्री विजय आर्य (मोहाली), श्री रघुनाथ आर्य (पंचकुला), श्री सज्जन सिंह राठी, श्री प्रदीप कुमार, श्री ऋषिराज शास्त्री (रोहतक), श्रीमती सुधा वर्मा (दिल्ली), डॉ. धर्मपाल पूर्व निदेशक बागवानी विभाग, हिमाचल प्रदेश आदि भी अपने साथियों के साथ सम्मिलित हुए। तीनों दिन ऋषि लंगर की समुचित व्यवस्था की गई थी। अन्तिम दिन भोजन की व्यवस्था आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर कुमार ने की। वार्षिकोत्सव अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।